हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ0 प्रियंका नीरज रूवाली*, वन्दना सिंह**

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन हिन्दू परिवारों में आधुनिक परिवर्तन के सन्दर्भ में है, जो कि शोध के दृष्टिकोण से प्रासंगिक विषय है। भारतीय संस्कृति, जो सबसे पुरानी और सबसे समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, अब आधुनिकता के आने से संक्रमण के दौर से गुजर रही है। भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था परिवार है, जो अब निरन्तर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। परिवार के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जाती, क्योंकि व्यक्ति का प्राथमिक सामाजीकरण परिवार में ही सम्भव है। आधुनिकता के प्रभाव से अंतरजातीय विवाह, सन्तानात्मक परिवार, प्रेम विवाह, लिव–इन रिलेशनशिप आदि जैसी अवधारणाएँ आयीं तथा परिवार के आर्थिक, धार्मिक, मनोरंजनात्मक प्रकार्यों पर भी सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डाला। अतः उक्त अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है जिसमें पत्र–पत्रिकाओं, न्यूज पेपर, आर्टिकल आदि के माध्यम से सूचना एकत्र की गयी है।

मुख्य शब्द– हिन्दू परिवार, आधुनिकीकरण, परम्परा, सामाजीकरण।

प्रस्तावना

हिन्दू परिवार समाज की महत्वपूर्ण संस्था है। कुछ समाजशास्त्री परिवार को समाज की बुनियादी इकाई मानते हैं। यह सही है कि समाज व्यक्तियों से बना है पर समाज व्यक्तियों का एक मात्र समूह नहीं है बल्कि समाज विभिन्न तरह के छोटे–बड़े समूहों से बना है। परिवार के अभाव में हम समाज की कल्पना नहीं कर सकते, परिवार मानव की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थापित किये जाते हैं। परिवार समिति और संस्था दोनों है, जो किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्थापित की जाती है और उद्देश्य पूर्ण होते ही समिति समाप्त हो जाती है, जैसे–परिवार, विश्वविद्यालय इत्यादि, लेकिन संस्था कभी समाप्त नहीं होती है। संस्था संगठित कार्यप्रणाली है जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी नियम–कानूनों के रूप में हस्तान्तरित होती रहती है जैसे–विवाह, धर्म, परिवार, विद्यालय, शिक्षा, प्रेस, चिकित्सा किन्तु कुछ संस्थायें समाज में परिवर्तन के साथ आज भी विद्यमान हैं जो आज निरन्तर मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। मानव की इसी आवश्यकता ने विवाह नामक संस्था को जन्म दिया और इसी संस्था ने परिवार को। परिवार व्यक्तियों का वह समूह होता है जिसमें बच्चों का पालन–पोषण होता है। परिवार स्थायी और सार्वभौमिक संस्था है। इसका स्वरूप अलग–अलग देशों में भिन्न हो सकता है। आधुनिकीकरण का प्रभाव पश्चिमी देशों में पहले से ही है इसीलिए पश्चिमी देशों में नाभिकीय परिवारों की संख्या सबसे अधिक है। यही संकल्पना निरन्तर भारत में भी बढ़ती जा रही है और आधुनिकीकरण का प्रभाव व्यक्ति के एक पहलू पर ही (परिवार पर) नहीं पड़ रहा है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों पर पड़ रहा है।

हालांकि वर्तमान में लोगों ने अपने खान–पान, रहन–सहन, बोल–चाल में बहुत परिवर्तन कर लिया है, लेकिन उनके विचार अभी भी पुराने हैं इसलिए परिवार में संघर्ष व्याप्त है।

सी0 सी0हैरिस (1983)[1] – एकाकी परिवार अब पहले की तरह स्थाई नहीं है, अब भूमिका संरचना में भी विभिन्नता आ गई है। विकसित देशों की भाँति अधिकांश विवाहित स्त्रियाँ एवं माताएँ घर से बाहर नौकरी पेशा कार्यों में कार्यरत् हैं। जिससे एकाकी परिवार में भी परिवर्तन हो रहा है। जो निरन्तर उतार–चढ़ावों के साथ अस्तित्व में बनी हुई है। फिर भी कुछ लोग इसके भविष्य को लेकर अत्यधिक चिन्तित हैं, कि यह संस्था धीरे–धीरे समाप्ति की राह पर है।

परम्परागत स्तर में हिन्दू परिवार का अर्थ संयुक्त परिवार से है–संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जो सामान्यतः एक घर में रहते हैं, एक रसोई का बना भोजन करते हैं, जो सम्पत्ति के सम्मिलित स्वामी होते हैं, जो सामान्य पूजागृह में पूजा करते हैं और आपस में रिश्तेदार और नातेदार होते हैं। वैदिक सभ्यता से लेकर आधुनिककाल तक में परिवार कुछ परिवर्तन के साथ आज भी विद्यमान है।

वैदिक सभ्यता दो कालों में बँटी हुई है–

1– ऋग्वैदिककाल

2– उत्तरवैदिककाल

* सह प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

** शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार या कुल होती है। इस समाज में हिन्दू परिवार संयुक्त थे और हिन्दू परिवार का आधार पितृ सत्तात्मक था। पितृ सत्तात्मक परिवार से तात्पर्य जिसमें पिता या बड़ा भाई परिवार का मुखिया होता था और परिवार के मुखिया का ही बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों पर नियंत्रण था।

उत्तरवैदिककाल में भी हिन्दू परिवार संयुक्त थे। इस समाज में भी परिवार के मुखिया का ही बच्चों पर तथा अन्य सदस्यों पर नियंन्त्रण होता था। ब्रिटिशकालीन समाज में भी हिन्दू परिवार संयुक्त था, लेकिन काफी हद तक सम्पत्ति का बँटवारा होता था। फिर आधुनिक काल में हिन्दू परिवार वैश्वीकरण, औद्योगीकरण व नगरीकरण के कारण संयुक्त से एकाकी की ओर परिवर्तित हो रहे हैं, क्योंकि संयुक्त परिवार में महिला व पुरूष की सोच समाजवादी थी, सबको साथ में लेकर चलने की प्रथा विद्यमान थी और आज वैश्वीकरण के कारण परिवार का पुरूष सदस्य एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवास कर रहा है और उसकी सोचने समझने की क्षमता में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। वह आज सबके बारे में नहीं, बल्कि अपने बारे में सोच रहा है। आज महिला या पुरूष की सोच व्यक्तिवादी हो गई है।

वर्तमान हिन्दू परिवार में पाश्चात्य देशों का जिस प्रकार से प्रभाव पड़ रहा है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दू परिवार भविष्य में लुप्त हो जायेगा? उभरते तथ्यों को देखने से ऐसा लगता है कि परम्परागत मूल परिवार का भविष्य खतरे में है। इस सन्देह का कारण स्वाभाविक है क्योंकि तलाक में वृद्धि हो रही है। विकसित देशों में लोग विवाह के पूर्व स्वछन्द होकर यौन इच्छाओं की पूर्ति और प्रजनन का कार्य कर रहे हैं। अकेले रहने वाले लोगों की संख्या में भी दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। बहुत सारे समाजशास्त्री आज यह सोचने के लिए विवश हो गये हैं कि परिवार समिति और संस्था के रूप में धीरे–धीरे अपने पतन की ओर बढ़ रहा है। यह पतन सम्भवतः एक दिन परिवार को इसकी समाप्ति के कगार पर लाकर खड़ा कर देगा।

संयुक्त परिवार का टूटना आधुनिकता की दृष्टि से प्रगति है क्योंकि आधुनिकता व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता में विश्वास करती है और इन दोनों चीजों के लिए संयुक्त परिवार में कोई गुंजाइश नहीं रहती। उनमें परिवार के मुखिया की तानाशाही चलती है, न कि व्यक्ति की मर्जी।

किसी भी सशक्त देश के निर्माण में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जो निरन्तर अपने विकास कार्यक्रमों से दिन–प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। कहने को तो परिवार बहुत छोटी इकाई है, लेकिन परिवार की मजबूती हमें बड़ी से बड़ी मुसीबत से बचाने में कारगर है। व्यक्तियों के समूह से परिवार बनता है, परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता है। इसलिए कहा भी जाता है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है। परिवार के महत्व और उसकी उपयोगिता को प्रकट करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 15 मई को सम्पूर्ण विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। परिवार दिवस की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने 1994 को की थी और इस वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष घोषित किया था। तब से प्रत्येक वर्ष 15 मई को 'परिवार दिवस' के रूप में निरन्तर मनाया जा रहा है।

भारत में हिन्दू परिवार के सम्बन्ध में इरावती कर्वे (1953) के0 एम0 कपाड़िया (1956), एलिनरॉस (1961) डॉ0 ए0 एम0 शाह (1955–58), एडविन ड्राइवर (1962) आई0 पी0 देसाई (1964), पोलिन कोलेण्डा (1968), एम0 एस0 गोरे (1968), रामकृष्ण मुखर्जी (1975) आदि ने अध्ययन किये हैं।

दैनिकभास्कर ई–पेपर [4]– आई0आई0टी0, गाँधीनगर ने सभी धर्मों के 453 संयुक्त परिवारों में बहुओं की भूमिका पर सर्वे किया और यह निष्कर्ष निकाला है कि सर्वे में 75 प्रतिशत बहुओं ने माना है कि संयुक्त परिवार में झगड़े होते हैं, लेकिन इस कारण परिवार के सदस्यों में मनमुटाव नहीं होता, न ही आपसी प्रेम कम होता है। आधुनिकता की इस दौड़ में देश में आज भी 86% परिवार संयुक्त हैं।

पत्रिका [5]– भारत सरकार की नई रिपोर्ट के अनुसार 2001 की जनगणना में कुल परिवारों की संख्या 19.31 करोड़ थी। इनमें से 9.98 करोड़ यानी 51.7 प्रतिशत एकल परिवार थे। 2011 में यह अनुपात बढ़कर 52.1 प्रतिशत तक पहुँच गया और एकल परिवारों की संख्या बढ़कर 12.97 प्रतिशत हो गई। 2011 में देश में कुल परिवारों की संख्या 24.88 करोड़ हो गई। उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर देखा जा सकता है कि निरन्तर एकल परिवारों का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है।

यू0 एन0 रिपोर्ट के अनुसार [6]–संयुक्त राष्ट्र की 'प्रोग्रेस ऑफ द वर्ल्डस वूमेन' 2019–2020 रिपोर्ट के अनुसार–भारत में वर्तमान में अभी भी सिंगल मदर्स की संख्या 1.3 करोड़ के आसपास है। पारिवारिक संरचनाएं किस प्रकार महिलाओं को प्रभावित कर रही हैं तथा महिला पुरूष के देरी से शादी करने की वजह से भी महिलाओं की स्थिति मजबूत हुई है। लेकिन सकारात्मक बदलाव के बावजूद भारत में घर चलाने वाली सिंगल मदर के परिवार में गरीबी दर 38 फीसदी है। जबकि दम्पति द्वारा चलाए जा रहे परिवार में गरीबी दर 22.6 फीसदी है। रिपोर्ट में यह भी आया है कि भारत में 46 फीसदी परिवारों में माता–पिता अपने बच्चों के साथ रहते हैं।

खुश परिवार पर वैश्विक सम्मेलन (कोरिया 6 अप्रैल 2019) [7]– 6 अप्रैल को फानग्योनई यरूशलेम मन्दिर के सेमिनार कक्ष में खुश परिवार पर वैश्विक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। चर्च के सदस्यों और नागरिकों को खुशहाल पारिवारिक जीवन जीने में मदद करने के लिए दुनिया भर से पुरोहित/कर्मचारी सदस्य इकट्ठे हुए। प्रधान पादरी किमजूचिअल ने सम्मेलन के रूप में नेतृत्व किया और बताया कि जब एक परिवार की सामाजिक संरचना का मुख्य भाग खुश हो जाता है तो समाज और देश खुश हो जाता है और समस्त राष्ट्र तरक्की की ओर बढ़ने लगता है।

दैनिकई–भास्कर पेपर के अनुसार (2016) [8]–दो दिवसीय सिद्धपुर नाट्य महोत्सव में शनिवार को 'पुरानी रवायत की नई जिंदगी' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान पुरानी परम्परा में आधुनिक बदलाव की चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि आधुनिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार अलग होते जा रहे हैं।

विभिन्न विद्वानों ने परिवार को इस प्रकार परिभाषित किया है–

मरडॉक के अनुसार[9] –मरडॉक ने 250 आदिम परिवारों का अध्ययन करने पर पाया कि कोई भी समाज ऐसा नहीं था। जिसमें परिवार रूपी संस्था अनुपस्थित हो। इन्होंने परिवार को सार्वभौमिक संस्था कहा।

मैकाइवर एवंपेज के अनुसार[9] –परिवार पर्याप्त निश्चित यौन सम्बन्ध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के पालन–पोषण की व्यवस्था करता है।

हेनरीमेन के अनुसार[9] –हिन्दू संयुक्त परिवार एक समूह है जिसमें जीवित पूर्वज एवं पुत्र तथा विवाह द्वारा इन पुत्रों से सम्बन्धित रिश्तेदार सम्मिलित होते हैं।

इरावर्तीकर्वे के अनुसार[10] –संयुक्त परिवार व्यक्तियों का समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते हैं, एक रसोई का बना भोजन खाते हैं, साझी सम्पत्ति रखते हैं, साझी पूजा में भाग लेते हैं तथा जो आपस में विशेष नातेदारी से बंधे होते हैं।

शोध पद्धति

शोध दृष्टिकोण –प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है।

शोध पद्धति –यह शोध पत्र वर्णनात्मक पद्धति के आधार पर निर्मित किया गया है। शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना है। शोध पत्र के अन्तर्गत परिवार में संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक परिवर्तन में प्रकाश डाला गया है।

आधार सामाग्री –द्वितीयक स्रोत–चूँकि शोध अध्ययन का उद्देश्य हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना है। अतः विषय की प्रकृति द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। जिसमें पत्र–पत्रिकाओं, न्यूज पेपर, आर्टिकल, रिपोर्ट, संगोष्ठी एवं अनुसंधानकर्ताओं के प्रतिवेदनों को शामिल किया गया है।

उद्देश्य –

आधुनिकीकरण के फलस्वरूप भारतीय परिवार में संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक परिवर्तन का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा –

एलिन डी0 रास (1961)[11] –की पुस्तक 'द हिन्दू फैमिली इन इट्स अर्बन सेटिंग' में भारत में हिन्दू परिवार से सम्बन्धित प्रथम महत्वपूर्ण अनुभवात्मक अध्ययन है। उन्होंने प्रौद्योगिकी परिवर्तनों के हिन्दू परिवारों पर पड़ रहे प्रभावों की विवेचना की।

आई0 पी0 देसाई (1964)[12]–आई0 पी0 देसाई ने अपनी पुस्तक 'सम आसपेक्टस ऑफ फैमिली इन महुआ–1964' में हिन्दू पारिवारिक संयुक्तता के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। इन्होंने महाराष्ट्र में स्थित एक छोटे समुद्री नगर महुआ के 425 हिन्दू परिवारों का निर्धारण किया। प्रथम पीढ़ियों के आधार पर द्वितीय संयुक्तता की मात्रा के आधार पर इन दोनों प्रकारों का प्रयोग करते हुए देसाई ने अपने अध्ययन द्वारा यह दिखलाने का प्रयास किया कि किस प्रकार हिन्दू परिवार के सदस्य और निकट रक्त सम्बन्धी भावनाओं की एकता और सम्बन्धों की पारस्परिकता के द्वारा एक दूसरे से बंधे रहते हैं।

एस0 एस0 गोरे (1968)[13]– ने अपनी पुस्तक ''अर्बनाइजेशन एण्ड फैमिली चेन्ज इन इण्डिया'' के माध्यम से दिल्ली महानगर के अग्रवाल जाति के हिन्दू परिवारों की परिवर्तनशील प्रकृति का अध्ययन किया। इसमें गोरे ने औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के प्रभावों का अध्ययन पारिवारिक परिवेश में किया है। यह अध्ययन 236 एकाकी परिवारों को सम्मिलित करता है। गोरे ने संरचनात्मक प्राकार्यात्मक अध्ययन के उपागम का प्रयोग करते हुए संयुक्त परिवारों के परम्परागत आदर्श स्वरूप और उसके परिवर्तनशील स्वरूप का विश्लेषण किया है।

हेमलता आचार्य (1974)[14]– ने अपने लेख में गुजरात के हिन्दू परिवारों के विश्लेषण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि परिवार

के ढाँचे में परिवर्तन हो रहा है। इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि परिवार का विघटन हो रहा है बल्कि हिन्दू परिवार परिवर्तित हो रहे हैं क्योंकि परिवार के सदस्यों की भूमिकाएं बदल रही हैं।

के0 एम0 कपाड़िया (1983)[15] – के0 एम0 कपाड़िया ने 1955–1956 में नवसारी खण्डगाँव के 15 गाँवों के 1345 हिन्दू परिवारों का अध्ययन किया था जिसमें संयुक्त परिवार में होने वाले आधुनिक परिवर्तन की विवेचना की। इन्होंने संयुक्त परिवार के टूटने का कारण नवीन न्याय व्यवस्था, शिक्षा के प्रसार, स्त्रियों में जागरूकता एवं अन्य बदली हुई मनोवृतियों को जिम्मेदार माना है।

मंयक प्रधान (2011)[16] – इन्होंने अपने प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत में हिंदू पारिवारिक संरचना में परिर्वतन को दर्शाया है। आज पश्चिमी सभ्यता और वैश्वीकरण के कारण संरचना और प्रकार्यों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। प्रजनन दर निरन्तर गिर रही है। 1970–1990 के बीच में महिलाओं में विवाह की उम्र भी बढ़ रही है। इससे पता चलता है कि महिलाएं भी आर्थिक तौर पर सशक्त होने की कोशिश कर रही हैं, हिन्दू परिवार का आकार सीमित होता जा रहा है।

हिमानी भसीन (2016)[17] – इन्होंने अपने प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक समय में हिन्दू पारिवारिक संरचना में परिवर्तन का अध्ययन किया है। अभी कुछ समय पहले के अध्ययन में पाया गया, कि 21% परिवार संयुक्त हैं और 75% हिन्दू परिवार एकाकी हैं। अध्ययन में आजकल के युवा एकाकी परिवार को महत्वपूर्ण मान रहे हैं, जो एकाकीपन एकाकी परिवार में होता है, वह संयुक्त परिवार में नहीं पाया जाता है। एकाकी परिवार की अवधारणा 17वीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में आयी।

अरूण कुमार (2018)[18] – जहां आधुनिकता के प्रभाव के कारण वर्तमान में हिन्दू परिवार में भावनात्मक सम्बन्ध खत्म होते जा रहे हैं तथा परिवार के सदस्यों में व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना आ रही है। वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहा है। उसे अपना कर्तव्य ही नहीं नजर आता है। वहीं आधुनिकता के कुछ सकारात्मक पक्ष भी नजर आ रहे हैं। वह यह कि स्त्रियाँ सशक्त हो गयी हैं। वह किसी पर भार स्वरूप नहीं रह गयी हैं, बल्कि एक सहचर या एक साथी के रूप में कार्य कर रही हैं। इस तरह लोगों ने वैवाहिक सम्बन्धों और पारिवारिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन किया है।

विश्लेषण – द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि हमारी भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण संस्था हिन्दू परिवार है और हिन्दू परिवार में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों परिवर्तन हो रहे हैं। भारतीय समाज प्रथाओं और परम्पराओं में भी जकड़ा हुआ है और उसमें परिवर्तन आधुनिकीकरण के माध्यम से हो रहा है। वर्तमान में परिवार में महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन हो रहा है। अब परिवार में घरेलू कार्यों में भी लिंग समानता देखी जाती है। यह सब महिला सशक्तीकरण, सामाजिक विधानों के कारण, महिला के परिवार में शिक्षित होने के कारण हो रहा है जिससे महिला की परिस्थिति पहले से भी उच्च हो गयी है। आज आधुनिकता के कारण गाँव में भी लगातार एकल परिवारों का आँकड़ा बढ़ता जा रहा है तथा 2011 में एकल परिवारों की संख्या 12.97 प्रतिशत है तथा भारत सरकार की रिपोर्ट 2001 की जनगणना में कुल परिवारों की संख्या 19.31 करोड़ थी। इनमें से 9.98 करोड़ यानि 51.7 प्रतिशत एकल परिवार थे। वर्ष 2011 में यह अनुपात बढ़कर 52.1 प्रतिशत तक पहुँच गया और एकल परिवारों की संख्या बढ़कर 12.97 करोड़ हो गयी। दैनिक ई–भास्कर पेपर ने भी माना है कि संयुक्त परिवार में मतभेद होते हैं लेकिन आपसी प्रेम कभी कम नहीं होता, यू0 एन0 रिपोर्ट ने भी माना है कि आज समाज में सिंगल मदर्स की संख्या बढ़ती जा रही है। आज भारत में घर चलाने वाली सिंगल मदर के परिवार में गरीबी दर 38 प्रतिशत है जबकि दम्पत्ति द्वारा चलाये जा रहे परिवार में गरीबी दर 22.6 प्रतिशत है तथा एक अन्य सम्मेलन खुश परिवार पर वैश्विक सम्मेलन 6 अप्रैल, 2019 में बताया गया कि जब एक परिवार समाज का एक मुख्य भाग खुश हो जाता है तो समाज एवं देश खुश हो जाता है तथा दो दिवसीय सिद्धपुर नाट्य महोत्सव में शनिवार को पुरानी रवायत की नई जिंदगी विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया और वक्ताओं द्वारा कहा गया है कि आधुनिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार अलग हो रहे हैं।

निष्कर्ष – उपरोक्त आँकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या के उपरान्त जो निष्कर्ष निकलकर आये वह निम्न प्रकार हैं :–
परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। यह परिवर्तन निरन्तर हिन्दू परिवार में हो रहा है अपने अस्तित्व को बनाये रखते हुए। आज आधुनिकीकरण के कारण हिन्दू परिवार हाशिये पर आ गये हैं। हिन्दू परिवार में बच्चों के पालन–पोषण से लेकर शिक्षा–दीक्षा तक द्वितीयक संस्थाएं कार्य कर रही हैं लेकिन सकारात्मक पहलू से ज्यादा नकारात्मक पहलू भी नज़र आ रहे हैं। कोई भी व्यक्ति आज संयुक्त परिवार में नहीं रहना चाहता क्योंकि परिवार में एक–दो लोगों के परिश्रम करने से कुछ नहीं बचता। जिससे आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हो पाते। आज आधुनिकता ने परिवार में भी स्त्री–पुरूष को समान कर दिया है। आज महिलाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ रही है और वह किसी पर भार नहीं है और अपने निर्णय लेने में सशक्त हो गयी हैं।

संन्दर्भ सूची –

1. रावत, हरिकृष्ण, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, जयपुर (2011) पृ0 483
2. सिंह, जे0 पी0, समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त नई दिल्ली (2011) पृ0 208
3. गुप्ता, एम0 एल0 शर्मा, डी0 डी0 समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा (2002) पृ0 85
4. परमार अनिरूद्ध सिंह, संयुक्त परिवार के टूटने के लिए जिम्मेदार होने की मान्यता गलत, गुजरात, 2019
5. इफ्तेखार : सामाजिक बदलाव, शहरों में बढ़ा संयुक्त परिवारों का चलन, तो गाँवों में दिखा बिखराव, नई दिल्ली
6. भारत में अधिकांश परिवार सिगंल मदर्स की देख–रेख में, 26 जून 2019
7. खुश परिवार पर वैश्विक सम्मेलन, कोरिया, 6 अप्रैल 2019
8. दैनिक ई–पेपर भास्कर पेपर : संगोष्ठी : पुरानी परम्परा में आया आधुनिक बदलाव : संयुक्त परिवार हो रहे अलग, 2016
9. प्रधान मंयक : भारत में पारिवारिक संरचना में परिवर्तन, रिसर्च जे0 हयूमनिटीस एण्ड सोशल साइन्स, 2 (2011) : अप्रैल–जून 2011, पृष्ठ 40.43
10. भसीन हिमानी : आधुनिक समय में पारिवारिक संरचना में बदलाव, द इन्टरनेशनल जनरल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी, ISSN-2348-5396 Volume-3- जुलाई– सितम्बर – 2016 पृष्ठ सं0, 20, 25
11. जोशी अर्पणा, परिवार की बदलती भूमिका, उत्तरा, महिला पत्रिका जुलाई सितम्बर, 2017 पृष्ठ 15
12. कुमार, अरूण, परिवार के स्वरूप का वर्तमान परिदृश्य–एक समाजशास्त्री विश्लेषण, पियर रिव्यूड जर्नल ISSN-2278 -8808- नवम्बर, दिसम्बर 2018 Vol– 6/48